प्रकाश

Exported from ambuda.org on 2025-12-23 05:04:04 UTC

1

अच्युत भगवान् की तरह तीनों लोकों में पूज्य सदाचार विजयी हो। अच्युत भगवान् की भाँति सदाचार भी स्वर्ग और मोक्ष प्रदान करता है। भगवान् और सदाचार दोनों श्री-सम्पन्न होकर सौभाग्यशाली हैं। अच्युत भगवान् सत्या (सत्यभामा) में अनुरक्त हैं तो सदाचार सत्य में आसक्त है ॥ १ ॥

2

मनुष्य को ब्राह्ममुहूर्त में आलस्य छोड़कर जाग जाना चाहिए । गुणों का आश्रय लेनेवाली श्री (शोभा) प्रातःकाल खिले हुए (जागे हुए) कमल पर जा विराजती है ॥ २ ॥

3

पुण्य-कार्यों से शरीर को सदैव पवित्र और स्नान द्वारा उसेस्वच्छ रखना चाहिए । इन्द्र ने वृत्र नाम के असुर को मारने से उत्पन्न पाप स्नान करके ही दूर किया था ॥ ३ ॥

4

भगवान् महेश्वर की पूजा किये बिना कोई काम न करना चाहिए । ईश्वर की अर्चना में लगे रहने के कारण ही श्वेत-मुनि को यमराज यमपुरी ले जाने में असमर्थ रहें ॥ ४ ॥

5

श्रद्धापूर्वक शास्त्रों में बताई गयी विधि के अनुसार ही श्राद्ध करना चाहिए। शास्त्र पर श्रद्धा करने के कारण ही विद्वान् भीष्म ने अपने पिता शन्तनु के हाथों में पिण्ड न दे कर भूमि पर ही पिण्ड को रख दिया ॥५॥

6

उत्तर और पश्चिम की ओर सिरहाना करके नहीं सोना चाहिये । शय्या के उलट-फेर के कारण ही दिति के पुत्र दैत्य का विनाश इन्द्र ने गर्भ में ही कर दिया था ॥ ६ ॥

7

भिखमंगों, याचकों को कुछ देकर ही भोजन करना चाहिए ।एक बार राजा श्वेत ने किसी भिखारी को कुछ दिए बिना ही स्वयं भोजन कर लिया था इसलिए मरने के बाद परलोक में उसे खाने को कुछ नहीं दिया गया, भूख के मारे उसे अपना ही मांस नोचनोचकर खाना पड़ा ॥७॥

8

अच्छी तरह पैर धोकर ही जप, होम और देवताओं का पूजन करना चाहिए । पैरों को अपवित्र रखने के कारण ही राजा नल के शरीर में कलियुगकलिपुरुष ने प्रवेश किया ॥ ८ ॥

9

निर्भय होकर रात में न घूमना चाहिए। रात में निर्भय होकर घूमने के कारण ही चोर न होते हुए भी माण्डव्य ऋषि को चोर समझकर उन्हें शूली पर चढ़ा दिया गया था ॥ ९ ॥

10

मनुष्य को चाहिए कि परायी स्त्री पर अनुराग और स्त्रियों पर विश्वास न करे। राम-पत्नी सीता की कामना रखने से ही रावण का वध हुआ तथा पत्नी (पर विश्वास करने) के कारण ही विदूरथ मारा गया ॥ १० ॥

11

न मद्य का व्यसन करे और न प्रमत्त होकर अमानवीय व्यवहारकरे । प्रमत्त होने के कारण ही वृष्णिवंश के लोग (एक दूसरे पर) तृण का प्रहार कर-कर के मर गए ॥ ११ ॥

12

ईर्ष्या से कलह उत्पन्न होता है और क्षमा से ऐश्वर्य की उत्पत्ति होती है। ईर्ष्या दोष के कारण ही जनमेजय को विप्र-शाप मिला ॥ १२ ॥

13

क्लेश की हालत में पड़कर भी धर्म की मर्यादा नहीं छोड़नी चाहिए । धर्म की रक्षा के लिए ही हरिश्चन्द्र ने चाण्डाल का सेवक बनना स्वीकार कर लिया था ॥ १३ ॥

14

बुद्धिमान् मनुष्य को चाहिए कि वह सत्य का व्रत तोड़कर किसी काम को सफल न बनावे । सत्य को छोड़ने के कारण ही युधिष्ठिर को नरक देखना पड़ा था ॥ १४ ॥

15

सदा सत्पुरुषों की ही संगति करनी चाहिए, गुणरहित की नहीं। श्रीराम की संगति से ही विभीषण को विशाल राज्य प्राप्त हुआ ॥ १५ ॥

16

नहीं करना चाहिए। माता के शाप से ही सर्प-यज्ञ में नागों का नाश हो गया ॥ १६ ॥

17

पिता को अपनी जवानी देकर उनका बुढ़ापा खुद ले लेने वाले अपने सबसे छोटे विनम्र पुत्र पुरु को पिता ययाति ने प्रसन्न होकर चक्रवर्ती सम्राट् बनाया ॥ १७ ॥

18

सात्त्विक भावना रखकर ही दान देना चाहिए । पश्चात्ताप से दूषित दान कभी न देना चाहिए । दान के शेष अंश की शुद्धि के लिए ही बलि ने अपने आपको बन्धन में डाल दिया था ॥ १८ ॥

19

सत्त्वगुण से पूर्ण व्यक्ति को चाहिए कि वह त्याग (दान) के बदले कुछ पाने की इच्छा न करे । कर्ण ने इन्द्र को अपने कुण्डलों का दान दिया परन्तु उसने शक्ति की याचना की इसलिए कर्ण में मलिनता आ गयी ॥ १९ ॥

20

ब्राह्मणों का कभी अपमान न करना चाहिए, क्योंकि (अपमानित) ब्राह्मणों का शाप ही असह्य दुःखकारक होता है। ब्राह्मण के शाप से ही राजा परीक्षित को तक्षक नाग ने काट लिया और वह ब्राह्मण की शापाग्नि में भस्म हो गया ॥ २० ॥

21

दम्भपूर्वक उद्धत हो कर धर्म का आचरण नहीं करना चाहिए क्योंकि इस प्रकार से किया गया धर्म अन्त में निष्फल ही होता है। कर्ण ने ब्राह्मण का छद्मवेष धारण कर परशुराम से अस्त्रविद्या सीखी । उनसे उसने ब्रह्मास्त्र प्राप्त किया, लेकिन कपट का भण्डाफोड़ हो जाने पर उसे वर के स्थान पर यह शाप मिला कि तुम्हारा ब्रह्मास्त्र निष्फल होगा ॥ २१ ॥

22

जो सेवा करने के योग्य न हो उसकी सेवा धन का लोभ रख कर न करनी चाहिए । दुर्योधन जैसे दुष्ट व्यक्ति की सेवा करने से ही भीष्म-द्रोण जैसे महापुरुषों, महासेनापतियों का नाश हुआ ॥ २२ ॥

23

दूसरों की प्राण-रक्षा के लिए तत्पर तथा दयावान् अवश्य होना चाहिए । शिबि ने कपोत (कबूतर) की रक्षा के लिए श्येन पक्षी (बाज) को अपना शरीर ही दे डाला ॥ २३ ॥

24

द्वेष को अपने मन से हटाकर मन को फूल से भी अधिक कोमल और सुन्दर बनाना चाहिए । देवासुर संग्राम में देवताओं और दानवों का संहार द्वेष के कारण ही हुआ ॥ २४ ॥

25

उपकार को भूलकर मनुष्य को कृतघ्न न होना चाहिये । उपकार करने वाले नाडीजंघ नाम के बगुले को मारकर ब्राह्मण पतित हो गया था ॥ २५ ॥

26

बुद्धिमान् मनुष्य को प्रगाढ प्रेम में पड़कर स्त्री के वशीभूत न होना चाहिए । स्त्री के वशीभूत होने से ही राजा दशरथ को पुत्रशोक से प्राण छोड़ने पड़े ॥ २६ ॥

27

स्वयं अपनी प्रशंसा करके अपने गुणों को मलिन न बनाना चाहिए । अपने गुणों की प्रशंसा करने के कारण ही ययाति स्वर्गलोक से पतित हुये ॥ २७ ॥

28

कठोरता से भरे, बाण जैसे चुभने वाले तीखे वाक्य नहीं बोलना चाहिए । वाणी की कठोरता से उत्पन्न क्रोध के कारण ही भीम ने कुरुवंश का नाश कर डाला ॥ २८ ॥

29

स्वामी को प्रिय लगने वाली ऐसी चुगलखोरी न करनी चाहिए, जिसमें दूसरों को क्लेश हो । चुगलखोरी करने से ही सूर्य और चन्द्रमा को राहु ग्रस लिया करता है ॥ २९ ॥

30

अधम व्यक्तियों द्वारा सदैव की जाने वाली तथा सम्मान को मिटा देने वाली याचना न करनी चाहिए । बलि से याचना करने के कारण ही भगवान् विष्णु को विराट् से वामन रूप धारण करना पड़ा ॥ ३० ॥

31

भाई-बन्धुओं, नातेदारों-रिश्तेदारों का न तो अपमान करना चाहिए, न उन्हें रोकना चाहिए । अपने दामाद शिव जी का अपमान करने से ही दक्ष के यज्ञ का विध्वंस हुआ ॥ ३१ ॥

32

विवाद में पड़ कर न तो मदान्ध होना चाहिए और न दूसरों पर असहनशीलता प्रकट करनी चाहिए। वचनों की कठोरता के कारण ही भगवान् कृष्ण ने शिशुपाल का शिर काट लिया था ॥ ३२ ॥

33

गुणों की प्रशंसा करके दूसरों का सम्मान बढ़ाना चाहिए । प्रशंसा से ही हनुमान् जी श्रीराम का कार्य करने में समर्थ हुए ॥ ३३ ॥

34

बुद्धिमान् पुरुष को बार-बार धन की याचना करके किसी को उद्विग्न न करना चाहिए । अश्व, रत्न और लक्ष्मी देने पर भी जब समुद्र मथा गया तो वह विष उगलने लगा ॥ ३४ ॥

35

कुटिल, निष्ठुर और लोभी मनुष्यों के साथ प्रेम-संबन्ध न रखना चाहिए। निमन्त्रण पाकर वशिष्ठ के यहाँ पहुँचे हुए विश्वामित्र ने उनकी धेनु का ही अपहरण कर लिया ॥ ३५ ॥

36

कठोर तपस्या में लीन व्यक्तियों की भी इन्द्रियों पर विश्वास न करना चाहिए। (महातपस्वी होते हुए भी) विश्वामित्र ने उत्सुक हो कर मेनका अप्सरा को गले लगा लिया था ॥ ३६ ॥

37

किसी प्रकार के वियोग से उत्पन्न दुःख में दीनता छोड़कर धैर्य धारण करना चाहिए। अश्वत्थामा का वध सुनते ही धैर्य छोड़ देने के कारण ही द्रोणाचार्य को मरना पड़ा ॥ ३७ ॥

38

बुद्धिमान् को चाहिए कि वह कभी भी क्रोध रूपी राक्षस के वशीभूत न हो । क्रोध के वशीभूत होने के कारण ही भीम ने राक्षस की भाँति दुःशासन की छाती का खून पिया था ॥ ३८ ॥

39

हिंसा रूपी घोर मलिनता से युक्त शिकार का व्यसन छोड़ देना चाहिए । शिकार में आसक्त होने के कारण ही पाण्डु ने शापवश शरीर छोड़ा था ॥ ३६३९ ॥

40

शंकर भगवान् की भाँति प्रसन्न होकर अपने ही विनाश की बुद्धि न देनी चाहिए । भस्मासुर को वरदान देकर शिव जी ने अपने ही विनाश का उपाय रचा ॥ ४० ॥

41

कभी भी सज्जन पुरुषों की बात का ऐसा उल्लंघन करना चाहिए जिससे उनके हृदय में चोट पहुँचे। ऐसे ही अपराध पर शंकर जी ने वेदवादी ब्रह्मा के चारों मुखों को कतर दिया था ॥ ४१ ॥

42

तत्त्ववेत्ता पुरुष को चाहिए कि वह जाति की अपेक्षा गुणों का आदर करे । द्रोण का पुत्र जाति से ब्राह्मण होते हुए भी कर्म से शूद्र था और जन्म से शूद्र होते हुए भी विदुर क्षमाशील ब्राह्मण था ॥ ४२ ॥

43

विद्यार्थी को चाहिए कि वह उद्वेग रहित होकर अपनी सेवा से गुरु को प्रसन्न करे । गुरु-सेवा में तत्पर होकर ही कच ने महान् शारीरिक क्लेश सहन किया था ॥ ४३ ॥

44

स्वामी की सेवा में लीन निर्दोष भक्त (सेवक) का बहिष्कार न करना चाहिये। सती (निर्दोष) सीता को छोड़कर राम बहुत शोकातुर हुये थे ॥ ४४ ॥

45

मनुष्य को मृत्यु के बाद पुनः स्मरण की जाने पर यश रूपी शरीर को जीवित रखने वाली प्रसिद्धि की रक्षा करनी चाहिए। राजा इन्द्रद्युम्न मरने के बाद स्वर्ग गया। पुण्य क्षीण हो जाने के बाद जब वह फिर मृत्युलोक में आया तो एक दीर्घजीवी कछुयेकछुवे ने उसके यश का पुनः विस्तार किया, जिससे वह फिर स्वर्ग का हिस्सेदार बना ॥ ४५ ॥

46

शीघ्र ही भाग जानेवाली राजलक्ष्मी की रक्षा कायरता से न करनी चाहिये । प्रसिद्ध है कि राजा नन्द की राजलक्ष्मी व्याडि और इन्द्रदत्त ने युक्ति से हरण कर ली थी ॥ ४६ ॥

47

शक्तिहीन हो जाने पर आदमी को सहनशील बन जाना चाहिए। निर्बल होकर किसी सबल पर आक्रमण या आक्षेप न करना चाहिए । कार्तवीर्य अर्जुन ने रावण को आक्षेप करने के कारण ही बाँध लिया था ॥ ४७ ॥

48

सदा धूर्त्तता से भरे हुए वेश्या के वचन पर भूलकर भी विश्वास न करना चाहिए । योगी और विरागी होते हुए भी ऋष्यशृङ्ग वेश्या द्वारा आसक्त और शृङ्गारी बना दिये गये ॥ ४८ ॥

49

शक्ति के अभिमान से चूर होकर छोटे से छोटे शत्रु का भी अपमान न करना चाहिए । शक्ति के अभिमान से चूर परशुराम को बाल रूप राम ने ब्राह्मण समझकर ही छोड़ा था ॥ ४९ ॥

50

हत्यारों और क्रूर कर्म करनेवालों का कभी विश्वास न करना चाहिए । भीम ने संसार के परम शत्रु जरासन्ध को बीच से चीर डाला ॥ ५० ॥

51

उचित और अनुचित पर ध्यान न देकर युक्ति से अपने स्वार्थ का साधन न करना चाहिए । छल से वालि का वध करने के कारण ही भगवान् राम की कीर्ति कलंकित हुई ॥ ५१ ॥

52

एकान्त में यदि माता भी हो तो मनुष्य को चाहिए कि वह अपनी इन्द्रियों को काबू में रखे । शम्बर असुर की स्त्री अपने पुत्र तुल्य दामाद प्रद्युम्न पर भी कामासक्त हो गयी थी ॥ ५२ ॥

53

योगियों, तपस्वियों के धैर्य को डिगाने की चंचलता न करनी चाहिये । ऐसा करने से ही कामदेव भगवान् शिव की नेत्राग्नि से भस्म हो गया ॥ ५३ ॥

54

नित्य कलह से भरे हुए जुए पर आसक्ति नहीं रखनी चाहिए । इस बात को न मान कर ही युधिष्ठिर अपना सर्वस्व जुए में हार गए थे ।

55

राजा की प्रसन्नता पर तनिक भी विश्वास न करना चाहिए । राजा नन्द ने अपने मंत्री शकटार को कैदखाने में डाल दिया था ॥ ५५ ॥

56

लोकायतवाद से प्रभावित होकर नास्तिक हो जाना ठीक नहीं । हिरण्यकशिपु को मारने के लिए भगवान् खम्भा फाड़कर प्रकट हुए थे ॥ ५६ ॥

57

ऊँचे पद पर पहुँचकर बड़ों का अपमान न करना चाहिए । नहुष मे इन्द्र होकर अगस्त्य मुनि का अपमान किया जिससे उसका पतन हो गया ॥ ५७ ॥

58

हितकर उपदेशों को सुनकर उनका यथोचित पालन करे । विदुर की सलाह न मानने से दुर्योधन का विनाश हुआ ॥ ५९ ॥

59

अधिक भोजन करने से रोगी की अग्नि मंद पड़ जाती है । उसे भोजन से अरुचि हो जाती है। घी का अधिक भोजन कर लेने से अग्नि को भी अजीर्ण हो गया था ॥ ६० ॥

60

प्रयत्न करके अपने अन्दर की बुराइयों को दूर करने की कोशिश

61

करनी चाहिए । केवल कठिन व्रत से शरीर को सुखाने से कोई फ़ायदा नहीं। देखिये तपस्या से ही कुम्भकर्ण निद्रा में बेहोश पड़ा रहने लगा ॥ ६१ ॥

62

इस संसार में वर्तमान और भविष्य की स्थिरता की आशा न रखनी चाहिए । देखिये, राम, रघु, शिव, पाण्डु आदि चक्रवर्ती राजा कहाँ चले गये ॥ ६२ ॥

63

अपने पूर्वजों के वचन, कर्म, शरीर और क्रियाओं की निन्दा न करनी चाहिए। अष्टावक्र मुनि के शरीर की निन्दा करने से श्रीसुत ने कुरूपता पायी ॥ ६३ ॥

64

दुष्टों को शिक्षा देकर अपनी वाणी को व्यर्थ न करना चाहिए। देखिए, शुक्राचार्यजी की छः गुणों से युक्त नीति से सुरक्षित रहते हुए भी दानव अन्त में नष्ट हो गये ॥ ६४ ॥

65

जो क्रोधी, तुनुक मिज़ाज़ी हों और स्थायीरूप से शत्रुता के भाव रखने वाले हों, उन्हें नाराज़ न करना चाहिए। चाणक्य ने ऐसे ही क्रोध के कारण सात दिन के अन्दर नन्दवंश को नष्ट कर दिया ॥ ६५ ॥

66

सतियों की तपस्या से प्रज्वलित क्रोधाग्नि को कुपित न करना चाहिए । रावण के वध के लिए वेदवती ने अपना शरीर छोड़ (कर सीता के रूप में जन्म लिया और अन्त में उसे समूल नष्ट कर) दिया ॥

67

विद्या और विनय के साधन गुरु की आराधना श्रद्धा और भक्ति से करनी चाहिए । राम की भक्ति से प्रसन्न होकर गुरु विश्वामित्र जी ने उन्हें बड़े-बड़े अमोघ अस्त्र-शस्त्र प्रदान किये थे ॥ ६७ ॥

68

किसी को कुछ देने का वायदा करने पर अथवा जिसे नियत समय पर दान दिया जाता हो उसे बिना माँगे ही खुद दे देना चाहिये । न तो उसे माँगना पड़े और न किसी के दबाव डालने पर ही दिया जाय । ऐसा न करने से बदनामी होती है । राजा द्रुपद ने गुरु द्रोणाचार्य को राज्य मिलने पर उसका कुछ हिस्सा दे देने का वायदा किया था, किन्तु राज्य मिलने पर उसने उन्हें नहीं दिया तो द्रोणाचार्य ने अर्जुन के द्वारा उस पर आक्रमण कराकर उससे अपना हिस्सा ले लिया था ॥ ६८ ॥

69

धर्म, अर्थ और काम की साधना इतनी मात्रा में करनी चाहिए कि वे एक दूसरे के बाधक न बन जायँजाय । सगर आदि प्राचीनमहापुरुष, राजा महाराजा इसी त्रिवर्ग की उचित नियमित साधना करने वाले थे ॥ ६६ ॥

70

अपने वंश से कम होने की इच्छा कभी न करनी चाहिए । उसके बराबर या उससे अधिक होने का प्रयत्न करते रहना चाहिए । रघुवंश का उत्कर्ष होने पर भी श्रीराम उस कुल से भी अधिक उन्नतिशील हो गये ॥ ७० ॥

71

तीर्थों में स्नान करके सदा अपने को पवित्र और निर्मल बनाना चाहिए । लोमश द्वारा बताए गए पवित्र तीर्थों में स्नान करने से ही पाण्डव कृतार्थ हुए थे ॥ ७१ ॥

72

आपत्ति के समय मदद देने वाली कलाओं की भी जानकारी रखनी चाहिए। पता नहीं कौन कला किस समय काम दे जाय । अर्जुन जैसे महान् योद्धा और विद्वान् ने आपत्ति के समय राजा विराट के यहाँ नृत्यकला सिखाने की जीविका प्राप्त की थी ॥ ७२ ॥

73

मनुष्य को चाहिए कि अपनी बुद्धि को भोग-विलास में आसक्तन बनाये। राजा जनक राजकाज करते हुए भी उससे इस तरह निर्लिप्त रहते थे, जैसे जल में कमल का पत्ता ॥ ७३ ॥

74

अशिष्य की सेवा के लाभ का लोभ करने से गुरु लघु बन जाता है । संवर्त के यज्ञ में याचना करने से ही गुरु बृहस्पति को लज्जित होना पड़ा था ॥ ७४ ॥

75

भोग-विलास बढ़ानेवाली दुराचारिणी स्त्री को त्याग देना चाहिए । चन्द्रमा द्वारा बरती गयी अपनी पत्नी पर अधिक प्रीति होने के कारण देवगुरु बृहस्पति ने उसे जब पुनः स्वीकार कर लिया तो उनकी बड़ी निन्दा हुई ॥ ७५ ॥

76

गाने बजाने में आसक्त और विलास व्यसन में सदैव मग्न न रहना चाहिए । वीणा विनोद का अत्यधिक व्यसन रखने के कारण वत्सराज उदयन शत्रु द्वारा छले गये ॥ ७६ ॥

77

कुसुम के समान सुकोमल स्त्रियों को अपनी तीक्ष्णता से कभी उद्विग्न न करना चाहिए । अपनी पत्नी का भय दूर करने के लिए सूर्य को अपना तेज कम करना पड़ा था ॥ ७७ ॥

78

कमल की भाँति अपने कौश को धूर्त भ्रमर का भोज्य न बनाना चाहिए । देवताओं द्वारा क्रमशः एक-एक करके धन बटोर लेन के कारण ही महासागर श्रीहीन हो गया था ॥ ७८॥

79

महापुरुषों से प्राप्त उपदेशामृत को हृदय-घट में सुरक्षित रखना चाहिए । फूटे हुए घड़े के समान उसे बहा न देना चाहिए । देखिये, अर्जुन गीता का अर्थ भूल कर लड़ाई करने और गुणों में दोषों को देखने में ही निरत हो गया था ॥ ७९ ॥

80

विवेकी मनुष्य को चाहिए कि वह अपना ऐश्वर्य सहसा अपने पुत्रों को न सौंप दे । धृतराष्ट्र अपने प्रभुत्व को पुत्रों को सौंप देने के कारण ही तिनका के समान बन गया था ॥ ८० ॥

81

शत्रु होते हुये विशेष रूप से दुष्टता करने वालों के कन्धे पर किसी कार्य का भार नहीं देना चाहिए । शल्य द्वारा तेज का हानि करने से पीड़ित हुआ कर्ण प्रतापहीन हो गया ॥ ८१ ॥

82

अपने स्वामी द्वारा ऊँचा सम्मान प्राप्त करने के लिए क्लेशकारक फल को स्वीकार न करना चाहिए । शंकर भगवान् द्वारा शिर पर धारण किये जाने पर भी चंद्रमा क्षीण ही बना हुआ है ॥ ८२ ॥

83

सज्जनों द्वारा सेवित श्रुतियों, स्मृतियों द्वारा बताये गये आचरण को न छोड़े । सत्य-धर्म का परित्याग करने से ही दैत्यों को लक्ष्मी से हाथ धोना पड़ा ॥ ८३ ॥

84

चंचल लक्ष्मी को बाँधने के लिए गुणों का संग्रह करना चाहिए । गुणहीन हो जाने के कारण दैत्यों को छोड़कर लक्ष्मी गुणवान् देवताओं के पास चली गयी ॥ ८४ ॥

85

अग्नि, गौ, गुरु और देवताओं को पैर से न छूना चाहिए । जूठे हाथों से घी को भी न छूना चाहिए । जूठे हाथों से घी को छूने से दानव श्रीहीन हो गये थे ॥ ८५ ॥

86

प्रतिलोम विवाह से उन्नति की आशा न रखनी चाहिए। ययाति ने शुक्र की कन्या से विवाह करने से ही म्लेच्छता प्राप्त की ॥ ८६ ॥

87

रूप, द्रव्य, कुल और विद्या आदि से हीन पुरुष की हँसी कभी नहीं करनी चाहिये । वानररूपधारी नन्दी ने अपना उपहास करने वाले रावण को शाप दे दिया था । ८७ ॥

88

भाई-भाई के बीच उत्पन्न वैरभाव को दूर करने का उपाय करना चाहिए । किसी एक का पक्ष ग्रहण कर उनके वैर को बढ़ाना न चाहिए । कौरवों और पाण्डवों के युद्ध में बलरामजी निष्पक्ष ही बने रहे ॥ ८८ ॥

89

परोपकार ही संसार का सार है । ऐसा समझकर सभी जीवों के साथ उपकार करना चाहिए। भगवान् बुद्ध ने सभी जीवों का उद्धार करने की ही बुद्धि रखी ॥ ८९ ॥

90

गरीब भाई का भरण-पोषण करना चाहिए । मित्र की विपत्ति से रक्षा करनी चाहिए । बन्धुओं और मित्रों के साथ ऐसा ही व्यवहार करने से बलि याचकों का कल्पवृक्ष बना हुआ था ॥ ९० ॥

91

किसी का वध करने के लिए मारण-प्रयोग, कुहक-क्रिया आदि तांत्रिक प्रयोग कभी नहीं करने चाहिए । लक्ष्मण जी ने कृत्या आदि जैसे उग्रतांत्रिक प्रयोग करने वाले इन्द्रजित् मेघनाद का वध कर डाला था ॥ ९१ ॥

92

मनुष्य को क्रमशः ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास इन चार आश्रमों में जाना चाहिए । ययाति आदि प्राचीन राजाओं ने इसी क्रम से एक आश्रम के बाद दूसरे आश्रम में प्रवेश किया थाकिये थे ॥ ९२ ॥

93

आवश्यकता से अधिक धन-संपत्तियों का व्यय अपने हाथों से कर देना चाहिए । नहीं तो अगस्त्य द्वारा वातापि नामक दैत्य का भक्षण किये जाने पर जैसे दूसरों ने उसके कोश का व्यय किया उसी प्रकार अन्य लोग व्यय कर डालेंगे ॥ ९३ ॥

94

अन्त में सन्ताप पहुँचाने वाले काम जीवन में कभी न करने चाहिए । एक सिर बच जाने पर भी रावण सीता के निमित्त से आई हुई विपत्ति को स्मरण करता रहा ॥ ९४ ॥

95

वृद्धावस्था आ जाने पर, बाल पक जाने पर तपोवन की ओर रुचि रखनी चाहिए । कुरु आदि प्राचीन धीर राजाओं ने अन्तिम अवस्था में तपोवन का ही रास्ता लिया था ॥ ९५ ॥

96

वृद्धावस्था आ जाने पर मोक्ष प्राप्त करने का उपाय करना चाहिए जिससे दुबारा न वृद्ध होना पड़े, न पैदा होना पड़े । विदुर ने पुनर्जन्म का बीज (शुभाशुभ कर्म) ज्ञानरूपी अग्नि में भस्म कर डाला था ॥ ९६ ॥

97

मृत्युकाल में परमात्मा की सनातन ज्योति का दर्शन अपने हृदय के अन्दर करना चाहिए । शुकदेव, भीष्म आदि उसी ज्योति को प्राप्त कर योगी हो गए ॥ ९७ ॥

98

निश्चित अवधि पर मर जाने से पूर्व ही अच्छे कामों से जीवित रहने का उपाय करना चाहिए । मान्धाता आदि पुण्यात्मा महापुरुष आज भी अपने यशःशरीर से जीवित हैं ॥ ९८ ॥

99

अन्तकाल में सन्तोष देने वाले विपत्ति-नाशक भगवान् विष्णु काध्यान करना चाहिए । शर-शय्या पर पड़े हुए भीष्म ने गरुडध्वज भगवान् का ध्यान किया था ॥ ९९ ॥

100

सज्जनों द्वारा अनुमोदित, सुनने योग्य इस चारुचर्या को व्यासजी के अनुचर क्षेमेन्द्र ने भलीभाँति विचार कर संक्षेप में प्रकाशित किया है ॥ १०० ॥